कर लेते हैं, परन्तु निर्धन बच्चे अच्छी शिक्षा से बंचित रह जाते हैं। नतीजा यह होता है कि नाना प्रकार की प्रतिस्पर्धाओं में ये गरीब नवयुवक पीछे रह जाते हैं। शिक्षा की दोहरी व्यवस्था यदि दूर न की गई तो सामान्य जनों की शिक्षा का स्तर ऊंचा नहीं उठ सकेगा और शिक्षा के आधार पर शोषण जारी रहेगा। स्थिति दिन-ब-दिन गम्भीर होती जा रही है। लाइलाज होने के पहले रोकथाम आवश्यक है।

अतएव मैं माननीय शिक्षा मंत्री से निवेदन करूंगा कि वे गम्भीरता से इस पहलू पर विचार करें, शिक्षा शास्त्रियों से आवश्यक परामर्श करें, सामन्य शिक्षा में सुधार के माध्यम से तथा अन्य उपायों द्वारा दोहरी शिक्षा व्यवस्था को क्रमशः समाप्त करने की दिशा में तत्काल आवश्यक कदम उठावें।

(viii) Need to take steps to tackle the extremist activities in North-Eastern

प्रो० अजित कुमार मेहता (समस्तीपुर) : पूर्वोत्तर अंचल में विद्रोही गतिविधियों में फिर से तेजी आने के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। केन्द्रीय सरकार इसको शान्त करने के लिए विद्रोहियों की संस्थाओं पर पाबन्दी लगाने का विचार कर रही है पर यह समस्या का कारगर इलाज नहीं है। आपात स्थिति के बाद चुनावों मे मध्यमार्गियों की सरकार बनी थी तो राजनैतिक माहोल में परिवर्तन आया था और 1978 के बाद विद्रोहियों की ताकत कम हुई। लेकिन पिछले दो वर्षों से हालत फिर बिगड़ रही है। इसी से आराकान की पहाड़ियों में "ईसाक स्वू" और "मुईवाह" की स्थिति मजबूत हुई है। सेना ईसाक स्वू उत्तर इलाकों में तथा तांगखुल मुइवाह मणिपुर के तांगखुल इलाकों के पार अपना केन्द्र बनाए हुए है।

उत्तर वर्मा के अरुणाचल से लेकर मणिपुर तक के सीमावर्ती इलाकों में नागा विद्रोहियों के अड्डे बने हुए हैं। वे अरुणांचल के तिरप और नागालैंड के मौन जिलों के उस पार से दुर्गम सीमा का लाभ ले र घुसपैठ करते रहते हैं।

ऐसी परिस्थिति में विद्रोही गतिविधियों को केवल कड़े कानूनों और सेना के जरिए ठण्डा करना कठिन है। इन तरीकों से आम नौजवानों में विद्रोही होने की प्रवृत्ति ही पनपती है। विद्रोह यहां ऐतिहासिक कारणों से अपनी मनोवैज्ञानिक जड़ें जमा चुका है। इस का हल राजनैतिक माहौल के परिवर्तन से ही हो सकता है और सरकार को स्थिति बिगड़ने से पहले ही सचेस्ट होना चाहिए।

(ix) Need to open an agricultural College at Sitapur.

श्री राम लाल राही (मिसरिख) : उत्तर प्रदेश के जनपद सीतापुर तथा इसके इर्द-गिर्द जनपदों में इन्टरमीडिएट कक्षाओं तक कृषि विज्ञान पढ़ाने की सुविधा तो है, परन्तु इसके लगभग 150 किलोमीटर के इर्द-गिर्द बसे नगरों, जनपदों में कोई भी स्नातक अथवा स्नातकोत्तर कृषि विज्ञान शिक्षा के लिए सुविधा नहीं है। कोई कालेज अथवा डिग्री न तो निजी क्षेत्र में है और न सार्वजनिक क्षेत्र में है जिनमें कृषि विज्ञान पढ़ाया जाता हो। कृषि विज्ञान में इंटर तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद इन विषयों में उच्च शिक्षा के लिए बहुत दूर जाने पर अधिकांशतः नाम लिखाने के लिए स्थान रिक्त नहीं मिलते और कुछ छात्र ऐसे भी हैं जो अपनी गरीबी के कारण बहुत दूर पढ़ने नहीं जा सकते। अभी तक लखनऊ परिक्षेत्र तथा इसके इर्द-गिर्द पिछड़े जनपदों में कहीं भी कृषि विज्ञान की सुविधा केलिए स्नातक